Role of Bismark in the Unification of Germany.

तथा फ्रांस को ~~कुछ~~ लालच देकर अपने तरफ कर लिया। इसी कूटनीति अनुकूलन कर बिस्मार्क युद्ध की ताक में लग गया। श्लेसविग और होल्सटीन को लेकर दोनों में मनमुटाव हो ही चुका था। इसी समय बिस्मार्क ने संघीय परिषद को भंगकर नवीन संघ का चुनाव वयस्क मताधिकार के आधार पर कराने की माँग की लेकिन आस्ट्रिया इस बात पर सहमत न हुआ। इस पर प्रशा जर्मन संघ से अलग हो गया और 1866 में उसने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

इस युद्ध में सेडोवा के मैदान में आस्ट्रिया की बुरी तरह पराजय हुई। प्राग के संधि के अनुसार जर्मन संघ भंगकर दिया गया तथा जर्मन एकीकरण की माँग सुलभ हो गया। दक्षिण के चार राज्यों को छोड़कर बिस्मार्क ने उत्तरी जर्मनी राज्यों का संघ का निर्माण किया जिसका अध्यक्ष प्रशा बना।

जर्मनी की आधी एकता कायम हो गई लेकिन अभी भी दक्षिण के चार राज्य बाकी थे। बिस्मार्क जानता था कि फ्रांस उसका विरोध करेगा। फ्रांस के हित में यह था कि ये राज्य जर्मन संघ से पृथक रहें। इसलिए फ्रांस और प्रशा के बीच युद्ध अवश्यम्भावी थी। युद्ध के लिए बहाना भी मिल गया। वस्तुतः आस्ट्रिया-प्रशा युद्ध के समय नेपोलियन तृतीय ने तटस्थ रहना स्वीकार किया था क्योंकि उसका विचार था कि प्रशा और आस्ट्रिया लड़ते-लड़ते थक जायेंगे और मध्य यूरोप में फ्रांस का प्रभुत्व कायम हो जायेगा लेकिन आस्ट्रिया के हार से नेपोलियन का सपना टूट गया। अब नेपोलियन ने बिस्मार्क से तटस्थता की कीमत के रूप में लक्जमबर्ग की माँग की लेकिन बिस्मार्क ने स्वीकार नहीं किया और इससे दोनों देशों में तनाव बढ़ गई। इसी समय युद्ध का एक और बहाना मिल गया। 1868 में स्पेन के निवासियों ने साम्राज्ञी इसाबेल को हटा दिया। बिस्मार्क ने अपने नीति कुशलता से सम्राट विलियम के एक संबंधी को स्पेन की गद्दी पर बैठाने के लिए स्पेन के नेताओं को राजी कर लिया। फ्रांस ने इसका विरोध किया। फ्रांसीसी राजदूत ने इस संबंध में सम्राट विलियम से भेंट की। सम्राट ने इस बीच बातचीत के बारे में बिस्मार्क के पास टेलीग्राम भेजा। बिस्मार्क ने इस व्यवहार को संक्षिप्त कर इस तरह प्रकाशित किया, जिससे ऐसा लगे कि फ्रांस के राजदूत ने प्रशा के सम्राट के साथ अशिष्ट व्यवहार किया है। बिस्मार्क के इस चाल से जर्मनजनता उत्तेजित हो गई और 1870 में दोनों देशों में युद्ध छिड़ गया। युद्ध में फ्रांस अकेला था। ~~दक्षिण जर्मनी राज्यों के देशों में युद्ध छिड़ गया।~~ युद्ध

दक्षिण जर्मनी राज्यों ~~के देशों~~ में राष्ट्रीयता की लहर बढ़ गई थी और वे प्रशा का साथ देने लगे। सेडोवा के विजय के बाद बिस्मार्क ने आस्ट्रिया से अच्छा व्यवहार कर उसे मित्र बना चुका था। इसने इटली को रोम देने का वादा कर अपने तरफ कर लिया। इस तरह युद्ध में सेडोवा के मैदान में फ्रांस प्रशा से बुरी तरह पराजित हुआ। 1871 ई० में वर्साय की संधि हुई जिसके द्वारा जर्मन एकीकरण पूरा हुआ और प्रशा के राजा विलियम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया।

इस प्रकार हम पाते हैं कि बिस्मार्क ने अपनी कूटनीतिक कुशलता से तथा युद्ध के द्वारा जर्मन एकीकरण करने में सफल हुआ। वह रेड-पोलिटिक्स का समर्थक था और वह रक्तपात और शस्त्र प्रयोग की नीति अपनाते हुए जर्मन एकीकरण को पूरा किया लेकिन जर्मन एकीकरण के सम्बन्ध में बिस्मार्क की सफलता की विवेचना करते समय हम इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं कि जर्मन एकीकरण की नींव आर्थिक एकीकरण तथा हीगल फिक्टे फिश्च जैसे दार्शनिकों के प्रयास से पहले ही पड़ चुकी थी। बिस्मार्क ने अपनी कूटनीति द्वारा सभी परिस्थितियों को अपनी योजना के अनुकूल कर लिया और इस प्रकार जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ।

The End
by
Bablu.